"Arthvishwa" International Journal
Multidisciplinary, Peer Reviewed, Indexed, Refereed, International Journal ISSN: 2319-6289
Published Month and Year: August 2025 (Ref. No.: NSL/ISSN/INF/2012/2476 Dated: October 19, 2012)

# माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की व्यावसायिक आकांक्षा का अध्ययन

प्रो. बी. के. गुप्ता, प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष, जवाहर लाल नेहरू मेमोरियल पी.जी. कॉलेज, बाराबंकी (उ.प्र.)
जगजीवन प्रसाद, शोधार्थी, शिक्षाशास्त्र विभाग, जवाहर लाल नेहरू मेमोरियल पी.जी. कॉलेज, बाराबंकी (उ.प्र.)

## सारांश

प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की व्यावसायिक आकांक्षा का अध्ययन करना था। इस अध्ययन में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया। न्यादर्श हेतु बाराबंकी जनपद के माध्यमिक स्तर के 200 विद्यार्थियों का चयन किया एवं जे. एस. ग्रेवाल द्वारा निर्मित ''व्यावसायिक आकांक्षा मापनी'' का प्रयोग आंकड़ों का संकलन करने के लिए किया गया। परिणाम में यह पाया कि माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की व्यावसायिक आकांक्षा में लैंगिक विभिन्नता के संदर्भ में तथा क्षेत्र के संदर्भ में सार्थक अंतर है।

**मुख्य शब्द : व्यावसायिक आकांक्षा।**

## प्रस्तावना

इक्कीसवी शताब्दी को विज्ञान तथा उद्योग का युग कहा जा सकता है। विज्ञान और उद्योग के इस युग में मनुष्य के जीवन का महत्वपूर्ण पक्ष व्यवसाय है। आजीविका का मनुष्य के जीवन में महत्वपूर्ण स्थान है क्योंकि जीवन की प्रत्येक सुविधा को प्राप्त करने के लिए और समाज में व्यक्ति को भली भांति जीवन व्यतीत करने के लिए धन की आवश्यकता होती है, और इस धन को अर्जित करने के लिए अनेक साधन है। व्यवसाय जीवन निर्वाह का मुख्य साधन है। जीविका विहीन जीवन की कल्पना ही नही की जा सकती है। वैदिक युग में शिक्षा को जीविकोपार्जन का साधन नहीं माना गया है। जो शिक्षा को जीविकोपार्जन का साधन मानते थे, ऐसे लोग निन्दा के पात्र होते थे। किन्तु बिना भोजन के भी काम नहीं चल सकता। इसलिए हम जहाँ शिक्षा का अर्थ अन्तःज्योति से लगाते है वही शिक्षा का उद्देश्य यह भी होना चाहिये कि हम आत्मनिर्भर रह कर योग्य नागरिक बन सकें।

वर्तमान युग व्यावसायिक जागरुकता का युग है। समाज एवं विद्यालय का समग्र वातावरण इस प्रकार का नहीं है, कि विद्यार्थी पढ़ाई के साथ–साथ अपने व्यवसाय की प्राप्ति के सम्बन्ध में अपनी आकांक्षाओं को निर्धारित कर सके। बच्चे को क्या बनाना है यह उनके माता–पिता बचपन में तय कर लेते हैं और इसी आधार पर अपने बच्चों को विद्यालय पढ़ने भेजते हैं। विद्यार्थियों के लिए व्यवसाय का चयन करना काफी कठिन होता है क्योंकि किशोरों ावस्था में व्यवसाय के चयन के सम्बन्ध में सही निर्णय लेने की क्षमता नहीं होती है। माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों में ऊर्जा को सही दिशा नहीं मिल पाती है जिसका उनके व्यक्तित्व के साथ–साथ उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर भी नकारात्मक प्रभाव पडता है। हमारे देश में विद्यार्थी माध्यमिक स्तर के बाद से ही विभिन्न व्यवसायों में जाना प्रारंभ करते हैं ऐसे में यह स्तर काफी महत्वपर्ण हो जाता है।

देश की शिक्षा व्यवस्था की व्यवहारिक कमी यह है कि विद्यार्थियों को विभिन्न व्यवसायों के चयन के लिए किसी भी प्रकार का परामर्ष और प्रोत्साहन नहीं मिलता है। समाज एवं विद्यालय में भी विद्यार्थियों को अपनी योग्यताओं व रुचियों को पहचानने व विकसित करने का अवसर प्रदान नहीं करते ताकि विद्यार्थी कार्य–प्रवृत्तियों, कार्य कौशल व कार्य–मल्य को विकसित कर सकें और न केवल व्यवसाय के सम्बन्ध में अपितु जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में निर्णय लेने, सामजंस्य बना पाने व समस्याओं का समाधान करने की क्षमता प्राप्त कर सकगें।

## साहित्यावलोकन

- सिंह, अमित कुमार (2021) ने इण्टरमीडिएट स्तर पर अध्ययनरत् छात्र–छात्राओं की व्यावसायिक आकांक्षा पर उनके विद्यालयी वातावरण के प्रभाव का अध्ययन किया। इस अध्ययन का मुख्य उद्धेश्य इण्टरमीडिएट स्तर पर अध्ययनरत् छात्र–छात्राओं की व्यावसायिक आकांक्षा पर उनके विद्यालयी वातावरण के प्रभाव लिंग व जातीय वर्ग के संदर्भ में अध्ययन करना था। इस अध्ययन में न्यादर्ष के रूप में चयनित विद्यालयों के केवल 120 विद्यार्थी सम्मिलित हैं जिसमें 60 छात्रों तथा 60 छात्राओं का यादृच्छिक विधि से चयन किया गया। शोध परिणाम में

यह प्राप्त हुआ कि इण्टरमीडिएट स्तर पर अध्ययनरत् छात्र–छात्राओं की व्यावसायिक आकांक्षा पर उनके विद्यालयी वातावरण के प्रभाव लिंग व जातीय वर्ग के संदर्भ में सार्थक अंतर नहीं है।

- शंकर, रवि. (2018) ने माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की व्यावसायिक आकांक्षा का पारिवारिक संरचना, सामाजिक परिवेष व विद्यालय स्वरूप के परिप्रेक्ष्य में अध्ययन किया। इस शोध का उद्धेश्य पारिवारिक संरचना, सामाजिक परिवेष व विद्यालयी स्वरूप के परिप्रेक्ष्य में के विद्यार्थियों की व्यावसायिक आकांक्षा का तुलनात्मक अध्ययन करना है। इस अध्ययन हेतु सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है। अध्ययन हेतु 100 विद्यार्थियों का चयन सरल यादृच्छिकीकृत विधि से किया गया है। आँकड़ों की प्राप्ति के लिए प्रमापीकृत परीक्षण व्यावसायिक आकांक्षा प्रष्नावली डा. जे. एम. ग्रेवाल (1998) का प्रयोग किया है। अध्ययन में पाया गया कि पारिवारिक संरचना का विद्यार्थियों के व्यावसायिक आकांक्षाओं पर प्रभाव नहीं पड़ता है। जबकि सामाजिक परिवेष और विद्यालय स्वरूप का विद्यार्थियों की व्यावसायिक आकांक्षा पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। शहरी परिवेष के विद्यार्थियों व्यावासयिक आकांक्षा ग्रामीण परिवेष के विद्यार्थियों की अपेक्षा अधिक पायी जाती है। इसी प्रकार पब्लिक स्कूल में अध्ययन करने वाले विद्यार्थियों की व्यावसायिक आकांक्षा सरकारी स्कूल में अध्ययन करने वाले विद्यार्थियों की अपेक्षा अधिक पायी गयी है।
- यादव, मुरारी (2018) ने माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की व्यावसायिक आकांक्षा का एक अध्ययन किया। माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की व्यावसायिक आकांक्षा का अध्ययन किया गया है। अध्ययन हेतु साधारण यादृच्छिक न्यादर्ष विधि के द्वारा 100 विद्यार्थियों का न्यादर्ष के रूप में चयन किया गया। आंकड़ों के एकत्रिकरण के लिए डॉ. सरिता आनन्द द्वारा निर्मित उपकरण व्यावसायिक आकांक्षा मापनी का प्रयोग किया गया तथा आंकड़ो के विष्लेषण के लिए मध्यमान, प्रमाणिक विचलन एवं टी–परीक्षण सांख्यिकीय विधियों का प्रयोग किया गया। अध्ययन के आधार पर यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की व्यावसायिक आकांक्षा में लिंग एवं विषय वर्ग का प्रभाव नहीं पड़ता है। छात्र एवं छात्राओं की व्यावसायिक आकांक्षा में अंतर नहीं है एवं कला वर्ग एवं विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों की व्यावसायिक आकांक्षा में अंतर नहीं है।
- वर्मा, लक्ष्मी. (2016) ने उच्च एवं निम्न व्यावसायिक आकांक्षा का किशोरों ें की शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन किया। इस अध्ययन का उद्धेश्य उच्च एवं निम्न व्यावसायिक आकांक्षा का किशोरों की शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन करना था। इस अध्ययन के न्यादर्ष हेतु 957 किशोरों का चयन किया हैं। चरों के मापन के लिए डॉ. ग्रेवाल द्वारा र्निमित व्यवसायिक आकांक्षा मापनी का प्रयोग करते हुए ऑकडों का संग्रहण किया। सांख्यिकीय विष्लेषण से यह निष्कर्ष निकाला गया कि वे किशोरों जिनका व्यावसायिक आंकांक्षा स्तर अधिक है उनकी शैक्षिक उपलब्धि निम्न व्यावसायिक आंकांक्षा स्तर वाले छात्रों की तुलना में अधिक है।

**अध्ययन का औचित्य**

बदलते विश्व परिदृष्य के परिणामस्वरूप व्यावसायिक क्षेत्र में क्रांतिकारी परिवर्तन आया है। नित्य नये व्यावसायिक क्षेत्रों का प्रादुर्भाव हो रहा है। कार्य जगत में बढते नये–नये क्षेत्र परिणाम हैं, हमारी बदलती आवष्यकताओं व मांग के, जिसने हमारी अभिवृति व विचारों को भी बदल कर रख दिया। आज यहाँ विद्यार्थी विद्यालय स्तर से अपने व्यवसाय के प्रति गंभीर हैं, वहीं कार्य जगत में भी प्रशिक्षित एवं योग्य युवाओं की मांग बढ गयी है, जिससे वे तेजी से बदलते विश्व में अपने अस्तित्व को कायम कर सकें। किन्तु वर्तमान समय में किसी भी व्यवसाय का चुनाव व्यक्ति की पसन्द, नापसन्द या परिवार की प्रारम्भिक जीविका से ही सम्बन्धित या सीमित नहीं रह गया है। बल्कि अनेकों प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष कारक इसे प्रभावित

"Arthvishwa" International Journal
Multidisciplinary, Peer Reviewed, Indexed, Refereed, International Journal ISSN: 2319-6289
Published Month and Year: August 2025 (Ref. No.: NSL/ISSN/INF/2012/2476 Dated: October 19, 2012)

करते है जैसे बालक का सामाजिक–आर्थिक स्तर, उसके माता–पिता की शिक्षा का स्तर, सामाजिक परिवेष व वातावरण, उसकी स्वयं की आकांक्षा, प्राप्त व उपलब्ध व्यावसायिक सूचनायें आदि। माध्यमिक स्तर के विद्यार्थी किसी व्यवसाय विषेष की आकांक्षा तो रखते हैं परन्तु उसे उस व्यवसाय में अपेक्षित व्यक्तिगत एवं व्यावसायिक योग्यताओं के विषय में जानकारी का अभाव होता है। कई बार तो उसका विषय वर्ग भी उसकी व्यावसायिक आकांक्षा से मेल नहीं खाता है। ऐसी स्थिति में वे भविष्य में अपना इच्छित व्यवसाय नहीं अपना पाते हैं तथा कई समस्याओं का षिकार हो जाते हैं। इसी तथ्य को ध्यान में रखते हुए प्रस्तुत अध्ययन में माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की व्यावसायिक आकांक्षा का अध्ययन किया गया है।

**समस्या कथन**

''माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की व्यावसायिक आकांक्षा का एक अध्ययन''।

**उद्देश्य –**

1 माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं की व्यावसायिक आकांक्षा का तुलनात्मक अध्ययन करना।

2 माध्यमिक स्तर के ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों की व्यावसायिक आकांक्षा का तुलनात्मक अध्ययन करना।

**परिकल्पना –**

1 माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं की व्यावसायिक आकांक्षा में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया जाता है।

2 माध्यमिक स्तर के ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों की व्यावसायिक आकांक्षा में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया जाता है।

**शोध विधि**

प्रस्तुत अध्ययन में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

**न्यादर्ष**

न्यादर्ष के लिए बाराबंकी जनपद के माध्यमिक स्तर के 200 विद्यार्थियों का चयन साधारण यादृच्छिक विधि द्वारा किया गया है।

**शोध में प्रयुक्त उपकरण एवं सांख्यिकी तकनीक**

आंकडों का संकलन करने के लिए जे. एस. ग्रेवाल द्वारा निर्मित ''व्यावसायिक आकांक्षा मापनी'' का प्रयोग किया गया तथा विष्लेषण मध्यमान, प्रमाप विचलन एवं टी–परीक्षण के द्वारा किया गया है।

**प्रदत विश्लेषण**

**परिकल्पना 1 – माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं की व्यावसायिक आकांक्षा में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया जाता है।**

**तालिका : 1 माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं की व्यावसायिक आकांक्षा में सार्थक अंतर**

| समूह | संख्या | मध्यमान | प्रमाप विचलन | टी मूल्य | परिणाम |
|---|---|---|---|---|---|
| छात्र | 100 | 40.39 | 13.06 | 2.12 | 0.05 सार्थकता स्तर पर अस्वीकृत |
| छात्राएँ | 100 | 44.26 | 12.71 | | |

**व्याख्या एवं विष्लेषण**

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट होता है कि माध्यमिक स्तर के छात्रों के व्यावसायिक आकांक्षा स्तर का मध्यमान 40.39 तथा प्रमाप विचलन 13.06 है। दूसरी ओर माध्यमिक स्तर की छात्राओं के व्यावसायिक आकांक्षा का मध्यमान 44.26 तथा प्रमाप विचलन 12.71 है। प्राप्त मध्यमानों और प्रमाप विचलन से टी परीक्षण की गणना करने पर टी परीक्षण का मूल्य 2.12 प्राप्त हुआ। जो कि 0.05 सार्थकता स्तर पर तालिका के मूल्य (1.97) से अधिक है। अतः शून्य परिकल्पना अस्वीकृत होती है तथा यह निष्कर्ष निकलता है कि माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं की व्यावसायिक आकांक्षा में सार्थक अंतर पाया जाता है।

**परिकल्पना 2 – माध्यमिक स्तर के ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों की व्यावसायिक आकांक्षा में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया जाता है।**

**तालिका : 2 माध्यमिक स्तर के ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों की व्यावसायिक आकांक्षा में**

"Arthvishwa" International Journal
Multidisciplinary, Peer Reviewed, Indexed, Refereed, International Journal ISSN: 2319-6289
Published Month and Year: August 2025 (Ref. No.: NSL/ISSN/INF/2012/2476 Dated: October 19, 2012)

सार्थक अंतर

| समूह | संख्या | मध्यमान | प्रमाप विचलन | टी मूल्य | परिणाम |
|---|---|---|---|---|---|
| ग्रामीण विद्यार्थी | 100 | 41.62 | 11.40 | 2.04 | 0.05 सार्थकता स्तर पर अस्वीकृत |
| शहरी विद्यार्थी | 100 | 44.83 | 10.84 | | |

**व्याख्या एवं विश्लेषण**

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट होता है कि माध्यमिक स्तर के ग्रामीण विद्यार्थियों की व्यावसायिक आकांक्षा स्तर का मध्यमान 41.62 तथा प्रमाप विचलन 11.40 है। दूसरी ओर शहरी विद्यार्थियों की व्यावसायिक आकांक्षा का मध्यमान 44.83 तथा प्रमाप विचलन 10.84 है। प्राप्त मध्यमानों और प्रमाप विचलन से टी परीक्षण की गणना करने पर टी परीक्षण का मूल्य 2.04 प्राप्त हुआ। जो कि 0.05 सार्थकता स्तर पर तालिका के मूल्य (1.97) से अधिक है। अतः शून्य परिकल्पना अस्वीकृत होती है तथा यह निष्कर्ष निकलता है कि माध्यमिक स्तर के ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों की व्यावसायिक आकांक्षा में सार्थक अंतर पाया जाता है।

**निष्कर्ष**

- माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं की व्यावसायिक आकांक्षा में सार्थक अंतर है।
- माध्यमिक स्तर के ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों की व्यावसायिक आकांक्षा सार्थक अंतर है।

**संदर्भ ग्रंथ**


- बेस्ट, जॉन डब्ल्यू. (1963). *रिसर्च इन एजूकेशन.* नई दिल्ली : प्रेन्टाइस हॉल ऑफ इंडिया प्राइवेट लिमिटेड.
- गुप्ता, एम.पी., गुप्ता, ममता (2009). *शैक्षिक निर्देषन एवं परामर्ष.* आगराः राखी प्रकाषन.
- करलिंगर, एफ.एन. (1967). *फाउण्डेशन ऑफ बिहेवियरल रिसर्च.* न्यूयार्क : हालट रेनहार्ट एण्ड विन्सटर
- कप्लान, आर एम. (1987). *बेसिक स्टेटिस्टिक फॉर दि बिहेवियरल साइन्स.* लन्दन : एलन एण्ड बेकन प्रिन्टर्स
- कपिल, एच. के.(1995). *अनुसंधान विधियाँ.* मेरठः भार्गव भवन
- पाठक, आर.पी. व भारद्वाज, अमिता पाण्डेय. (2012). *शिक्षा में अनुसंधान एवं सांख्यिकी.* नई दिल्ली : कनिष्क पब्लिशर्स.
- शंकर, रवि. (2018). माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की व्यावसायिक आकांक्षा का पारिवारिक संरचना, सामाजिक परिवेष व विद्यालय स्वरूप के परिप्रेक्ष्य में अध्ययन. *रिव्यू ऑफ रिसर्च,* 7(9), 1–5.
- श्रीवास्तव, डी. एन. (2007) *अनुसंधान विधियाँ,* आगराः साहित्य प्रकाशन.
- सिंह, अमित कुमार (2021). इण्टरमीडिएट स्तर पर अध्ययनरत् छात्र–छात्राओं की व्यावसायिक आकांक्षा पर उनके विद्यालयी वातावरण के प्रभाव का अध्ययन. *जर्नल ऑफ इमर्जिंग टेक्नोलोजी एण्ड इनोवेटिव रिसर्च,* 8(10), 553–562.
- सिंह, चन्द्र और शर्मा, हनुमान सहाय (2020). शैक्षिक समायोजन, पर निर्देशन एवं परामर्श के प्रभाव का अध्ययन. *इंटरनेषनल जर्नल ऑफ हिन्दी रिसर्च,* 6(6), 1–2.
- वर्मा, लक्ष्मी. (2016). उच्च एवं निम्न व्यावसायिक आकांक्षा का किशोरों ें की शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्यय, *जर्नल ऑफ रविशंकर यूनिवर्सिटी,* (22),121–124.
- यादव, मुरारी (2018). माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की व्यावसायिक आकांक्षा का एक अध्ययन. *रिमार्किंग एण्ड एनालाइजेषन,* 3(7), 156–159.